No. of Printed Pages : 14 **MTT–031**

POST GRADUATE CERTIFICATE IN TRANSLATION AND ADAPTATION (PGCAR)

Term-End Examination

June, 2026

MTT-031 : VARIOUS DIMENSIONS OF TRANSLATION AND ADAPTATION

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : *Attempt any* ***three*** *questions from Question Nos.* ***1*** *to* ***6****. Question Nos.* ***7*** *and* ***8*** *are compulsory. Answer questions (Q.* ***1*** *to* ***6****) in about* ***750*** *words and short notes Q. No.* ***7*** *in about* ***350*** *words each. All questions carry equal marks.*

---

1. Illuminate the broader perspective of translation.

2. Examine Cultural Turn in translation studies.

3. Discuss the emerging issues in translation.

4. Underline various levels of adaptation.

5. Examine the interrelation between inter-medial translation and adaptation.

6. Write a detailed note on the meaning and significance of copyright.

7. Write short notes on any *two* of the following :

   (a) Inter-lingual Adaptation

   (b) Transcreation

   (c) Equivalence in Adaptation

   (d) Translation of idioms and proverbs

8. (a) Translate any *one* of the following passages into Hindi :

   Once in a while, especially before the elections, the municipal officials came down and walked along the edge, peering into its dark current and saying something among themselves as to it

being a problem and so on. But they left it there until the next election. It was a stock cynicism for people to say when they saw anyone inspecting the drains : 'They are only looking for the election votes there !' At other times the gutter continued its existence unhampered, providing cloud of mosquitoes and the stench that characterized existence in Vinayak Mudali Street.

Presently a big crowd stood on the edge of the drain looking at its inky, swirling water. People sympathized with Margayya. Wild, inaccurate reports of what had fallen into it were circulated. Margayya heard people tell each other : "A box was dropped into it. That child threw away a gold chain into it." Everyone looked at Balu with interest. He seemed to have become a hero for the moment.

Or

The Giant took off his black cloak and hung it against the wall. Sophie saw that under the cloak he was wearing a sort of collarless shirt and a dirty old leather waistcoat that didn't seem to have any buttons. His trousers were faded green and were too short in the legs. On his bare feet he was wearing a pair of ridiculous sandals that for some reason had holes cut along each side, with a large hole at the end where his toes stuck out. Sophie, crouching on the floor of the cave in her night dress, gazed back at him through thick steel-rimmed glasses. She was trembling like a leaf in the wind, and a finger of ice was running up and down the length of her spine.

'Ha !' shouted the Giant, walking forward and rubbing his hands

together, 'What has us got here ?' His booming voice rolled around the walls of the cave like a burst of thunder.

(b) Translate any *one* of the following passages into English :

कमलेश्वर ने 'सारिका' के पन्नों के उन अंशों को सरकारी बाबुओं के सामने रखने की अपेक्षा काली स्याही से उन अंशों को ढँककर अपना प्रतिरोध जाहिर किया था। बाद के वर्षों में जब वे उच्चाधिकारी के रूप में दूरदर्शन से जुड़े, तो उन्होंने दूरदर्शन में व्याप्त कलाहीनता पर लगाम कसनी शुरू की थी। अफसरशाही को ज्यादातर रचनात्मक लोगों से परेशानी होती है। कमलेश्वर के साथ भी वही हुआ। किंतु अफसरी छोड़ने के बाद कमलेश्वर ज्यादा सक्रिय होकर फिल्म और टेलीविजन की दुनिया से जुड़ गए।

कमलेश्वर ने फिल्मों की दुनिया में एक लेखक की सही हैसियत कायम की थी। 'आँधी', 'द बर्निंग ट्रेन' जैसी फिल्मे लिखकर उन्होंने फिल्म माध्यम को भी

नयेपन से चित्रित करने में सफलता अर्जित की थी। कमलेश्वर जिस माध्यम में रहे, उन्होंने उसे अपने रंग से पोषित किया। यह रंग जहाँ निडरता से भरा हुआ था, वहीं इसमें समाज और मनुष्य के प्रति एक सजग दायित्व भावना भी थी।

अथवा

कहने की जरूरत नहीं कि दिये मिट्टी के बनते थे। सेठों, महाजनों के यहाँ पीतल के दीपाधार होते थे। लेकिन उनकी संख्या जयादा नहीं होती थी। उन्हें दीवाली में माँज कर चमका दिया जाता था। माँजने के बाद पीतल, स्वर्ण की तरह चमकता है। संध्या खत्म होते ही, जैसे ही रात आ जाती, दिये जलने शुरू हो जाते थे। बच्चों में जलते हुए दियों को सजाने की होड़ लग जाती थी। वे पूरी जिम्मेदारी से इस काम में बड़ों का हाथ बंटाते। साफ–सुथरे घरों में सरसों के तेल से जलते हुए दीपों की अनेकानेक पंक्तियाँ, देहातों, कस्बों और तत्कालीन नगरों को दिव्य–अलौकिक बना देती

थीं। वह सचमुच प्रकाश–पर्व होता था। दिये का प्रकाश आक्रामक नहीं होता–सरसों के तेल के दियों का प्रकाश सुखद आत्मीय और आँखों के लिए हितकर होता था। वस्तुत: काजल इसी लौ से तैयार किया जाता था। दीवाली में काजल बच्चों की आँखों में लगाया जाता था। वह काजल आँखों को फायदा पहुँचाता था। किशोरियाँ दिये सजाते समय उन्हें आँचल से ढँक लेती थीं ताकि वे बुझें नहीं। यह सौन्दर्य का अनुपम जीवंत बिम्ब होता था।

MTT–031

अनुवाद एवं रूपांतरण में स्नातकोत्तर प्रमाण-पत्र

(पी. जी. सी. ए. आर.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.टी.टी.-031 : अनुवाद एवं रूपांतरण के विविध आयाम

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रश्न संख्या **1** से **6** में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या **7** और **8** अनिवार्य हैं। प्रश्न सं. **1** से **6** का उत्तर लगभग **750** शब्दों में तथा प्रश्न सं. **7** की संक्षिप्त टिप्पणी (प्रत्येक) का उत्तर **350** शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

1. अनुवाद के व्यापक संदर्भ पर प्रकाश डालिए।

2. 'अनुवाद अध्ययन में सांस्कृतिक मोड़' की विवेचना कीजिए।

3. अनुवाद के उभरते मुद्दों की चर्चा कीजिए।

4. रूपांतरण के विविध स्तरों को रेखांकित कीजिए।

5. अंतर-माध्यम अनुवाद एवं रूपांतरण में अंतःसंबंध की विवेचना कीजिए।

6. प्रतिलिप्यधिकार के अर्थ और महत्व पर विस्तृत लेख लिखिए।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) अंतर-भाषिक रूपांतरण

(ख) अनुसृजन

(ग) रूपांतरण में समतुल्यता

(घ) मुहावरों व लोकोक्तियों का अनुवाद

8. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

Once in a while, especially before the elections, the municipal officials came down and walked along the edge,

peering into its dark current and saying something among themselves as to it being a problem and so on. But they left it there until the next election. It was a stock cynicism for people to say when they saw anyone inspecting the drains : 'They are only looking for the election votes there !' At other times the gutter continued its existence unhampered, providing cloud of mosquitoes and the stench that characterized existence in Vinayak Mudali Street.

Presently a big crowd stood on the edge of the drain looking at its inky, swirling water. People sympathized with Margayya. Wild, inaccurate reports of what had fallen into it were circulated. Margayya heard people tell each other : "A box was dropped into it. That child threw away a gold chain into it."

Everyone looked at Balu with interest. He seemed to have become a hero for the moment.

अथवा

The Giant took off his black cloak and hung it against the wall. Sophie saw that under the cloak he was wearing a sort of collarless shirt and a dirty old leather waistcoat that didn't seem to have any buttons. His trousers were faded green and were too short in the legs. On his bare feet he was wearing a pair of ridiculous sandals that for some reason had holes cut along each side, with a large hole at the end where his toes stuck out. Sophie, crouching on the floor of the cave in her night dress, gazed back at him through thick steel-rimmed glasses. She was trembling like a leaf in the wind, and a finger of ice was running up and down the length of her spine.

'Ha !' shouted the Giant, walking forward and rubbing his hands together, 'What has us got here ?' His booming voice rolled around the walls of the cave like a burst of thunder.

(ख) Translate any *one* of the following passages into English :

कमलेश्वर ने 'सारिका' के पन्नों के उन अंशों को सरकारी बाबुओं के सामने रखने की अपेक्षा काली स्याही से उन अंशों को ढँककर अपना प्रतिरोध जाहिर किया था। बाद के वर्षों में जब वे उच्चाधिकारी के रूप में दूरदर्शन से जुड़े, तो उन्होंने दूरदर्शन में व्याप्त कलाहीनता पर लगाम कसनी शुरू की थी। अफसरशाही को ज्यादातर रचनात्मक लोगों से परेशानी होती है। कमलेश्वर के साथ भी वही हुआ। किंतु अफसरी छोड़ने के बाद कमलेश्वर ज्यादा सक्रिय होकर फिल्म और टेलीविजन की दुनिया से जुड़ गए।

कमलेश्वर ने फिल्मों की दुनिया में एक लेखक की सही हैसियत कायम की थी। 'आँधी', 'द बर्निंग ट्रेन' जैसी फिल्मे लिखकर उन्होंने फिल्म माध्यम को भी

नयेपन से चित्रित करने में सफलता अर्जित की थी। कमलेश्वर जिरा माध्यम में रहे, उन्होंने उसे अपने रंग से पोषित किया। यह रंग जहाँ निडरता से भरा हुआ था, वहीं इसमें समाज और मनुष्य के प्रति एक सजग दायित्व भावना भी थी।

अथवा

कहने की जरूरत नहीं कि दिये मिट्टी के बनते थे। सेठों, महाजनों के यहाँ पीतल के दीपाधार होते थे। लेकिन उनकी संख्या जयादा नहीं होती थी। उन्हें दीवाली में माँज कर चमका दिया जाता था। माँजने के बाद पीतल, स्वर्ण की तरह चमकता है। संध्या खत्म होते ही, जैसे ही रात आ जाती, दिये जलने शुरू हो जाते थे। बच्चों में जलते हुए दियों को सजाने की होड़ लग जाती थी। वे पूरी जिम्मेदारी से इस काम में बड़ों का हाथ बंटाते। साफ–सुथरे घरों में सरसों के तेल से जलते हुए दीपों की अनेकानेक पंक्तियाँ, देहातों, कस्बों और तत्कालीन नगरों को दिव्य–अलौकिक बना देती थीं। वह सचमुच प्रकाश–पर्व होता था। दिये का प्रकाश आक्रामक नहीं होता–सरसों के तेल के दियों का

प्रकाश सुखद आत्मीय और आँखों के लिए हितकर होता था। वस्तुतः काजल इसी लौ से तैयार किया जाता था। दीवाली में काजल बच्चों की आँखों में लगाया जाता था। वह काजल आँखों को फायदा पहुँचाता था। किशोरियाँ दिये सजाते समय उन्हें आँचल से ढँक लेती थीं ताकि वे बुझें नहीं। यह सौन्दर्य का अनुपम जीवंत बिम्ब होता था।

× × × × ×